॥ जैन भवन ॥

तित्थयर

वर्ष : २८ अंक : ६ सितम्बर २००४

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २८ अंक - ६, सितम्बर, २००४

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता – Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com
e-mail : info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	क्षमा की शीतल धारा	मुनिश्री मिश्रीमलजी महाराज	२६५
२.	उमास्वाति और उनकी परम्परा	डॉ. सागरमल जैन	२७५
३.	यशोदा का त्याग	डॉ. लक्ष्मीनारायण पचौरी	२८२
४.	श्री चन्द्रराज चरित्र		२८४
५.	संकलन		२९२

मूल्य - ५.०० रूपये

कवरपृष्ठ : जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

क्षमा की शीतल धारा

मुनिश्री मिश्रीमल जी महाराज

धर्म की व्याख्याः— धर्म शब्द का प्रयोग साक्षर या निरक्षर सभी प्रकार के व्यक्ति प्रतिदिन अपने जीवन व्यवहार में करते हैं, लेकिन इसमें गर्भित अर्थगाम्भीर्य की ओर प्रायः किसी का भी ध्यान नहीं जाता है। शब्दशास्त्र के अनुसार धर्म शब्द का अर्थ होता है—धारण करना। आध्यात्मिक दृष्टि से धर्म का अर्थ होता है, जो प्राणियों को अधोगति में जाने से बचाये, जिससे अभ्युदय वा निश्रेयस् की प्राप्ति हो। धर्म शब्द की उक्त व्युत्पत्तियाँ शब्द और अर्थ की दृष्टि से की गई है, लेकिन उसके अन्तररूप को उजागर करने के लिये आध्यात्मिक संत कुन्दकुन्द की यह परिभाषा महत्वपूर्ण है-

वत्थु सहाबो धम्मो

—वस्तु का स्वभाव धर्म है। इसमें एक विशिष्टता के दर्शन होते हैं कि प्रत्येक वस्तु चाहे वह जड़ हो या चेतन, विनाशवान हो या अविनाशी, वह अपने स्वभाव को धारण किये रहती है। जड़ अपने स्वभाव को धारण किये रहता है और चेतन अपने स्वभाव को । कोई अपने स्वभाव से च्युत नहीं होते हैं।

लेकिन सृष्टि का महान तत्व है चेतन, जीव, आत्मा। सृष्टि में अन्य जड़ तत्व रहें, अपने स्वभाव में भी अवस्थित रहें, किन्तु आत्मा न हो तो अन्य तत्वों का होना या न होना बराबर ही है। आत्मा अन्य तत्वों का ज्ञाता है, भोक्ता है। इसीलिये धर्म का वास्तविक प्रयोजन आत्मा को जानना है, आत्महित के लिये आचरण करना है, आत्मस्थ हो जाना है। आत्मा को जानने, आचरण करने और आत्मस्थ होने की दृष्टि से भगवान महावीर की वाणी में धर्म का लक्षण है—अहिंसा, संयम और तप। यही उत्कृष्ट धर्म है और मंगलरूप है।[१]

---

१. धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।

— दशवै० १।१

आचार्य सामन्तभद्र के कथनानुसार धर्म वह है—जो प्राणियों को सांसारिक दुख से बचाकर उत्तम सुख की प्राप्ति कराता है।

संसार में अब तक धर्म की २२०० व्याख्याएं की गई हैं, भविष्य में और भी व्याख्याएँ की जायेंगी। उन सबका स्पष्टतया यह अर्थ होता है कि धर्म जीवन को उच्च, पवित्र और दिव्य बनाने के साथ-साथ पाप अथवा अनिष्ट का नाशक है एवं कल्याणकर है।

धर्म का अन्तरूप विचार है और बाह्य रूप आचार। इन दोनों के समन्वित रूप का सारांश यह है कि जो आचार-विचार प्रणाली जीवन को पाप से बचाती है, अनिष्टों से दूर रखती है, जिससे कल्याण का मार्ग खुलता है, वह धर्म है। इस व्यापक परिभाषा से धर्म का मंगलमयरूप प्रकट होता है। आत्मा के लिये मंगलकारी होने से वह आत्मधर्म है, विश्वमंगल का कारण होने से विश्वधर्म है। इसी प्रकार से व्यक्ति, समाज, ग्राम, नगर के प्रति उदात्त दृष्टि रखने से धर्म की व्यापकता सिद्ध हो जाती है।

माना कि आत्मा का स्वभाव धर्म है। जन्म, जरा, मरण आदि दुखों से जीव को बचाने वाला धर्म है और उस धर्मानुरक्त आत्मा को देवता भी नमस्कार करते हैं। धर्म से आत्मा की शुद्धि होती है। लेकिन धर्म का वह रूप कौन-सा है, जो विचार और आचार के लिये समान हो, विचार को प्रांजल बनाने के साथ-साथ आचार को विशुद्ध व सबल बनाता हो, दुखमुक्ति के साथ-साथ निश्रेयस् एवं अभ्युदय की प्राप्ति कराता हो? इसके उत्तर में कहेंगे—

खमादिभावो य दसविहो धम्मो।

— कार्तिकेयानुप्रेक्षा ४७८

क्षमादि भाव रूप दस प्रकार का धर्म है। अर्थात् वह धर्म क्षमा, निर्लोभता आदि दस लक्षण वाला है। जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—

दसबिहे समणधम्मे पण्णत्ते तं जहा खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे, संजमे, तवे, चियाए वंभचेरवासे।

—स्थानांग १०/७/२

श्रमण धर्म दस प्रकार का कहा गया है—क्षांति (क्षमा), मुक्ति (निर्लोभता), आर्जव, मार्दव, लाघव, सत्य, संयम, तप, त्याग और ब्रह्मचर्य।[१]

क्षमा अर्थात् सहनशीलता रखना, क्रोध को पैदा न होने देना और क्रोध उत्पन्न हुआ हो तो विवेक बल से निष्फल बना डालना। धर्म के साधनरूप उपकरणों एवं शरीर तक में भी आसक्ति न रखना मुक्ति-निर्लोभता है। इसे 'शौचधर्म' शुद्धि धर्म भी कहते हैं। आर्जव यानि भाव की विशुद्धि, विचार, भाव और बर्ताव की एक रूपता। चित्त में मृदुता और बाह्य व्यवहार में भी नम्रवृत्ति का होना मार्दव है। सत्पुरुषों के लिये जो हितकारी हो, ऐसे यथार्थवचन को 'सत्य' कहते हैं। मन, वचन और देह का नियमन करने के लिये अभ्यास करना 'संयम' कहलाता है। मलिनवृत्तियों के उन्मूलन के निमित्त अपेक्षित बल की साधना के लिये किया जाने वाला आत्मदमन 'तप' है। पात्र को ज्ञानादि सद्गुणों का प्रदान करना तथा इच्छाओं को कम करना त्याग है। किसी भी वस्तु में ममत्व बुद्धि न रखना 'आकिंचन्य' है। विषय-वासना को हटाकर ज्ञानादि सद्गुणों का अभ्यास करके ब्रह्म-आत्मा में रमण करना 'ब्रह्मचर्य' कहलाता है।

धर्म के उक्त दस प्रकार उत्तम हैं, श्रेष्ठ हैं, जीवन को श्रेष्ठता के शिखर पर पहुँचाने वाले हैं। इन्हें साधारणतः श्रमणधर्म व यतिधर्म भी कहते हैं। यतिधर्म इनको इसलिये कहते हैं कि ये जीवन व्यापी होते हैं, जीवन के आधार हैं और आत्मसाधक साधुजन इनका यावज्जीवन पालन करते हैं। श्रमण तो इनका पूर्ण रूप से पालन करते हैं, किन्तु अन्य जनसाधारण भी यथाशक्ति, यथासंभव इनका पालन अवश्य करें। सामान्य रूप से धर्म का संपूर्ण आचार पक्ष इन दस धर्मों में आ गया है।

इनका क्रमशः विवेचन करने के लिए मैं सर्वप्रथम क्षमाधर्म पर प्रकाश डालता हूँ।

---

१. उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्यागाकिंचन्य ब्रह्म-चर्यादि धर्म : ।

— तत्वार्थसूत्र ९ / ६

क्षमा धर्म

संसार का कारण

कषाय वृत्ति ही आत्मा के संसार भ्रमण का कारण है। अथवा कषाय ही संसार है, क्योंकि कष का अर्थ है जन्म-मरण रूप संसार और उसकी 'आय' अर्थात् प्राप्ति जिससे हो, उसे कषाय कहते हैं। कषाय आत्मगुणों को नष्ट कर देती है, अनेक प्रकार से दुख देती है। वैसे तो कषाय के अनन्त प्रकार हैं लेकिन उन सबका क्रोध, मान, माया और लोभ इन चार भेदों में समावेश हो जाता है।

संसार में मानव जीवन की प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभ है। कोई भी मनुष्य चाहे वह विद्वान हो या मूर्ख, धनवान हो या निर्धन, सदा काल के लिये जीवित नहीं रह सकता है—

आयु असार विचार हिये थिर अंजुली को नहिं रेवत पानी।

आयु को कोई भरोसा नहीं है, शरीर नश्वर है। जिस प्रकार अंजुली में भरा हुआ पानी बूंद-बूँदकर गिर जाता है, उसी प्रकार जीवन भी क्षण-क्षण व्यतीत होने वाला है। अतः आत्मकल्याण के लिये क्षणमात्र का प्रमाद मत कर—

ढील करे मत तू छिन की करले झट सुकृत लाभ-कमाई।

हे जीव! तत्काल ही इसी क्षण लाभकारी सुकृत रूपी कमाई करले। इस कमाई से ही तू संसार को पार कर लेगा। धर्म ही संसार रूपी वन में भटकते जीव का मार्गदर्शक है, वही अनन्त सुख और शाश्वत शांति प्राप्ति करा सकता है। आत्मकल्याण के लिये कषायों से मुक्ति प्राप्त करना आवश्यक है। कषायों से मुक्ति मिलना ही मोक्ष है—**कषायमुक्तिः किलमुक्तिरेव।**

कषायों की मुक्ति क्यों जरूरी है? तो इसके उत्तर में कहा जायेगा कि आत्मा को स्वभावदशा से विभावदशा की ओर ले जाने वाले क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कषाय ही हैं। ये चारों कषाय आत्मा के सद्गुणों का नाश करने के साथ-साथ उसे अधोगामी बनाते हैं। कषायों के द्वारा आत्मा के निम्नलिखित सद्गुणों का नाश होता हैं—

कोहो पीइ पणासेइ माणो विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ लोभो सव्वविणासणो।।

—दशवैकालिक सूत्र ८।३८

अर्थात् क्रोध आत्मा के प्रीतिगुण को नष्ट करता है, मान विनय गुण को, माया मैत्री का और लोभ उसकी सभी विशेषताओं का नाश कर डालता है।

क्रोध :-

क्रोध एक भयंकर असाध्य रोग है। क्रोध का आक्रमण होने पर व्यक्ति चेतनाशून्य हो जाता है तथा हिताहित का ज्ञान भूलकर नहीं करने योग्य कार्य भी करने पर उतारू हो जाता है। आवेश के कारण विवेक रूपी नेत्र बन्द हो जाते है और जीभ उचित-अनुचित का भान छोड़कर अनर्गल प्रलाप करने लगती है। क्रोध क्रोधी व्यक्ति को जलाता ही है, मन को असंयत बना देता है और शरीर के अंग अंग पर अपना प्रभाव दिखाता है, साथ ही उसके कटु वचनों की चिनगारियाँ जिस किसी पर पड़ती हैं, वह भी जलने लगता है, उसके मन को भी उद्विग्न बना देता है। तात्पर्य यह है कि क्रोधाग्नि सिर्फ क्रोधी को ही नहीं, क्रोध के पात्र को भी जलाने लग जाती है इसलिये महापुरुषों ने क्रोध को अग्नि कहकर उससे कोसों दूर रहने का सद्बोध दिया है।

सोमिल ब्राह्मण द्वारा शांत-दांत गजसुकुमाल मुनि के सिर पर अंगारों को रखना क्रोध का ही निकृष्टतम परिणाम था। उसे मुनि के सिर पर अंगारे रखते समय यह भान ही नहीं रहा कि मैं क्या कर रहा हूँ। मेरे कुकृत्य का क्या परिणाम होगा और परभव में मुझे इस कार्य का किस रूप में कटु फल मिलेगा। क्रोधाविष्ट व्यक्ति की परिणति का दिग्दर्शन कराते हुए ऋषिभाषित सूत्र में कहा गया है—

कोवाविद्धा ण याणन्ति मातरं पितरं गुरु।
अणिविजवन्ति साधु य रायाणो देवयाणि या।।

—अर्थात् क्रोधाविष्ट व्यक्ति विवेकशून्य होकर माता, पिता, गुरू आदि को ही नहीं जानता, वरन राजा, देव आदि को भी कुछ नहीं समझकर उनका अनादर कर बैठता है।

अतः इस क्रोध रूपी रोग से बचने के लिये महापुरुषों ने एक मार्ग बताया है—

उवसमेण हणे कोह।

—दशवैकालिक ८३९

—शान्ति से क्रोध को जीतो। क्षमा से क्रोध को जीतना चाहिये। बुद्धिमान पुरुषों को क्षमा की आराधना करनी चाहिये। क्रोध के दुष्परिणामों की ओर संकेत करते हुए कहा है—

इम णिरुद्धाउय संपेहाए दुक्खं य जाण अदु आगमेस्सं।
पुढो फासाइंय फासे लोयं य पास विफदमाणं।।

— आचारांग ४/३/१३६

क्रोध मनुष्य की आयु को नष्ट करता है, मानसिक दुख पैदा करता है। क्रोधी पाप कर्म का बंध कर परभव में जाता है और वहाँ नाना प्रकार के दारुण दुखों को भोगता है। अतः क्रोध का त्याग करना चाहिये।

क्रोध को चांडाल की उपमा दी गई है। लोक में चांडाल को अस्पृश्य माना गया है। इसी प्रकार जिसके हृदय में क्रोध रूपी चांडाल का प्रवेश हो जाता है वह जन्म से उच्च होने पर भी चांडाल की तरह अस्पृश्य माना जाता है और जन्म से चांडाल होने पर भी अगर क्रोध नहीं करता है तो वह महान सत्पुरुषों की कोटि में पहुंच जाता है।

चांडाल कौन ?

एक योगी नदी के किनारे ध्यान कर रहा था। एक चांडाल आया और योगी से कुछ दूर जाकर स्नान करने लगा। स्नान के बाद कपड़े धोने से कुछ छींटे योगी के शरीर पर आ गिरे। छींटे लगने से योगी का ध्यान खुल गया और चांडाल को पास में देखकर उसे बहुत क्रोध आया। पास में पड़े चीमटे को उठाकर उसने चांडाल को खूब पीटा। पीटने के पश्चात् उसे ध्यान आया कि मैं चांडाल के स्पर्श से अपवित्र हो गया हूँ तो चीमटे को फेंक दिया और नदी में स्नान करने लगा।

योगी के स्नान कर चुकने के बाद चांडाल ने भी पुनः स्नान किया। चांडाल की इस हरकत को देखकर योगी ने गुस्से में कहा—मूर्ख! मैं तो तेरे

स्पर्श से अपवित्र हो गया इसलिए मुझे स्नान करना पड़ा पर तूने फिर स्नान क्यों किया? मेरे स्पर्श से तो तू अपवित्र थोड़े ही हुआ है? तब चांडाल ने हाथ जोड़कर नम्रतापूर्वक कहा—भगवन्! आप तो महान्पवित्र हैं, किन्तु जिस समय आपने मुझे पीटा, उस समय मुझसे भी बड़ा चांडाल क्रोध आपके अन्दर प्रवेश कर गया था। उसके द्वारा अपवित्र होकर आपने मेरा स्पर्श किया, इस कारण मुझे भी स्नान करना पड़ा।

इसी लिये कहा गया है कि जब मनुष्य क्रोध के आवेश में क्रूर बन जाता है, उस समय हृदय की पवित्रता समाप्त हो जाती है। सभी सद्गुण जल जाते हैं और हृदय घोर गन्दगी से अपवित्र हो जाता है।

क्रोध-विजय का मार्ग : क्षमा :

पहले कहा जा चुका है कि शांति से क्रोध को जीतो। क्रोध रोग है, शांति उसकी दवा है। क्रोध ज्वाला है, शांति उससे बचाने वाला जल है। शांति का दूसरा नाम क्षमा है। क्षमा की महिमा का वर्णन अनेक जन्म लेने पर भी पूरा नहीं हो सकता है फिर भी संक्षेप में महर्षियों ने क्षमा की महिमा बतलाते हुए कहा है—

क्षमा ब्रह्म क्षमा सत्यं, क्षमा भूतं च भावि च।
क्षमा तपः क्षमा शौचं क्षमयेदं धृतं जगत्।।

—महाभारत, वनपर्व २।९।३७

क्षमा ब्रह्म है, सत्य है, भूत और भविष्यत है। क्षमा ही तप है, क्षमा ही शुद्धि है, क्षमा ने ही इस जगत को धारण कर रखा है। इतना ही क्यों, क्षमा ज्ञानी के ज्ञान का आभूषण है। आचार्य क्षेमेन्द्र ने कहा है—

ज्ञानस्याभूषणं क्षमा।

तो क्रोधविजय का अमोघ उपाय है, क्षमा! आचार्यों ने क्षमा का लक्षण इस प्रकार कहा है—

क्रोधोत्पत्तिनिमित्तासह्यचाक्रोशादिसंभवे कालुषोपरमः क्षमा।

अर्थात् क्रोध की उत्पत्ति के निमित्तभूत, असह्य आक्रोश, मारण ताडन आदि के प्रसंग उपस्थित होने पर भी मन को कलुषित न होने देना क्षमा है। क्षमा का साधक आक्रोश के विकट प्रसंग उपस्थित होने पर भी

अपने मन में संकल्प-विकल्पों को पैदा नहीं होने देते हैं। दुष्ट पुरुषों द्वारा अपमान या ताड़ना आदि किये जाने के अवसर पर यही सोचते है कि – मैंने इसका कुछ बिगाड़ा होगा, इसलिये गालियाँ दे रहा है और यदि मैंने इसका कुछ बिगाड़ा नहीं है तो यह बेचारा अज्ञानवश ऐसा कहता है, अतः दया का पात्र है और इसे क्षमा करना चाहिए। यह गालियां देकर अपनी ही हानि कर रहा है। गालियाँ मेरे शरीर में चिपकती नहीं हैं, अतः इसमें मेरी क्या हानि है? यदि वह दुष्ट पुरुष मारने भी लग जाये तो साधुजन सोचते हैं कि यह मार ही तो रहा है, मेरे प्राण तो नहीं लेता। प्राणघात की नौबत आ जाने पर भी सोचते हैं कि यह शरीर का ही तो घात कर सकता है, मेरी आत्मा का तो घात करने में समर्थ नहीं है, आत्मा के अमूर्त होने से उसका घात होना संभव नहीं है। इस प्रकार दुर्जनों द्वारा जैसे-जैसे आक्रोश के प्रसंग उपस्थित किये जाते हैं वैसे-वैसे ही क्षमाशील व्यक्ति आत्मोन्मुखी होता जाता है और आक्रमण करने वाले पर किंचिन्मात्र भी रोष नही करता है। किंतु आत्म-निरीक्षण कर शांति का ही अनुभव करने लगता है।

साधक की इस आत्मपरिणति का परिणाम यह होता है कि अपने पूर्वोपार्जित कर्मो की निर्जरा करके शुद्ध, बुद्ध, निरंजन, निराकार सत्चित् आनन्दमय परम आत्मा बनकर अक्षय अनन्त सुख का भोक्ता बन जाता है। इसलिये अनुभवी आचार्यों ने कहा है—

येन केनापि दुष्टेन पीडितेनापि कुत्रचित्।
क्षमा त्याज्या न भव्येन स्वर्गमोक्षाभिलाषिणा।

—जिस किसी दुष्ट जीव द्वारा पीड़ा दिये जाने पर भी स्वर्ग और मोक्षाभिलाषी जीव को क्षमा कभी भी नहीं छोड़नी चाहिये।

क्षमा का आदर्श शान्तिकाल में, अथवा इच्छानुसार काम होते रहने के समय प्रगट नहीं होता है किन्तु उसकी कसौटी तो तब होती जब मन थोड़े से प्रतिकूल कारणों के मिलने पर उछल पड़ता है। सिर भन्ना जाता है और हाथ पैर फूल जाते हैं। ऐसे समय में भी मन, वचन को संतुलित रखकर किंचिन्मात्र भी विकार जागृत नहीं होते देते हैं, वे ही वास्तव में क्षमावीर हैं। उन्हीं के लिए कहा है—

विकारहेतौ सति विक्रियन्ते, येषां न चेतांसि त एव धीराः।

विकार के कारण उत्पन्न होने पर भी जिनका चित्त विकृत नहीं होता है, वे ही धीर-वीर हैं। क्रोध की आग भड़कने पर भी जिसको आंच न लगे और जो संतृप्त होकर शांति से बैठा रहे वही तो वास्तव में साधु है।

देखना, ब्राह्मण गिर न जाये

एकनाथ महाराज महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत पुरुष थे। उनकी क्षमाशीलता की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। लेकिन ऐसे महापुरुषों के भी कुछ शत्रु बन जाते हैं और उन्हें अपमानित करने का मौका देखते रहते हैं। एक बार कुछ दुष्टों ने घोषणा करवादी कि जो कोई एकनाथ महाराज को गुस्सा दिला देगा, उसे दो सौ रुपये का नकद इनाम दिया जायेगा।

एकनाथ महाराज के क्षमाशील स्वभाव से सभी परिचित थे अतः कोई वैसा करने का साहस न कर सका। लेकिन एक गरीब ब्राह्मण ने रुपयों के लालच में आकर एकनाथ जी को गुस्सा दिलाने का बीड़ा उठा लिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही वह एकनाथ महाराज के घर जा पहुँचा। उस समय वे स्नान आदि से निवृत्त होकर भगवद् भजन कर रहे थे। युवक ने आव देखा न ताव धम्म से उनकी गोदी में जा बैठा। उसकी कल्पना थी कि ऐसा करने से वे अवश्य ही क्रोधित हो उठेंगे। लेकिन एकनाथ जी तो शांति-सागर थे, उन्होंने हँसकर दुलार पूर्वक उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा-भैया, तुम्हें देखकर मुझे बड़ा आनन्द हो रहा है। मिलने वाले तो सैकड़ों आते हैं लेकिन तुम्हारा प्रेम सबसे विलक्षण है।

कुछ समय बाद भोजन का समय होने पर उस युवक के लिये भी एकनाथ जी के पास ही भोजन करने को आसन लगाया गया। दोनों थालियों में भोजन परोस दिये जाने के बाद गिरिजाबाई (एकनाथ जी की पत्नी) घी परोसने को आईं। जैसे ही वे युवक की थाली में घी परोसने को झुकीं कि वह युवक लपककर गिरिजाबाई की पीठ पर सवार हो गया।

यह देखकर एकनाथ जी ने अपनी पत्नी से कहा—देखना, ब्राह्मण कहीं गिर न पड़े।

गिरिजाबाई भी क्षमामूर्ति थीं। उन्होंने उत्तर दिया– डरने की कोई बात नहीं, मुझे हरि (एकनाथ जी के पुत्र का नाम) को इसी प्रकार पीठ पर लादे हुए काम करने का अभ्यास है। इस बच्चे को मैं कैसे गिरने दूँगी।

यह सुनकर ब्राह्मण युवक दंग रह गया। रुपयों के लोभ में होने वाले कुकृत्य के लिये पश्चात्ताप करते हुए वह दोनों के चरणों में झुक गया।

इस उदाहरण से क्षमा का मूर्त रूप देखने को मिलता है। संभव है आप लोगों के साथ ऐसी अनहोनी हो जाये तो क्षणमात्र में भड़क उठेंगे और दुर्व्यवहार करने वाले को दंड देने-दिलाने से भी नहीं चूकेंगे। लेकिन सत्पुरुष तो सदैव अपने शत्रु को भी मित्र मानकर गुण ग्रहण करने के लिये लालायित रहते है। इतना ही नहीं, उसे सन्मार्ग पर लाने के लिये प्रयत्नशील होते हैं। उनका तो आदर्श है—

अड़ता से टलता रहे, जलता से जल होय।

इसके लिये हमारे सामने भगवान महावीर और चंडकौशिक सर्प का दृश्य है। ध्यानस्थ महावीर पर अपना तीव्र विषप्रहार करने में चंडकौशिक ने कमी नहीं रखी। (एक के बाद दूसरा तीसरा तीव्र प्रहार किया) लेकिन क्षमामूर्ति भगवान उसकी इस क्रोध परिणित को देखकर शांति में ही लीन रहे। अन्त में उसे संबोधित करते हुए बोले—चंडकौशिक! अपने जीवन को देख, तू क्रोध का दुष्परिणाम देख चुका है और आज भी उसी मार्ग पर बढ़ रहा है? जीवन का प्रयोजन बार-बार जन्म धारण करना नहीं है। अब भी अपने आप को परखकर कर्त्तव्य मार्ग पर चल पड़ इस अन्तर की वाणी का परिणाम क्या हुआ, आप सभी जानते हैं कि जन्म-जन्मान्तर का क्रूर परिणामी, जो उन्मार्गगामी होकर संसार में भटक रहा था, भावना बदलते ही नर से नारायण बनने के मार्ग पर चल पड़ा। क्रोध के दावानल में झुलसता जीवन नन्दनवन सी शान्ति का अनुभव करने लगा। इसका एक मात्र कारण था क्रोध पर क्षमा की विजय। पतित पावनी क्षमा की आराधना और साधना। इसलिये कहा गया है—

उत्तम क्षमा गहो रे भाई, इहभव परभव में सुखदाई।

क्रमशः

उमास्वाति और उनकी परम्परा

डॉ. सागरमल जैन

उमास्वाति और उनका तत्वार्थसूत्र जैन धर्म की श्वेताम्बर, दिगम्बर और यापनीय परम्पराओं में से मूलतः किससे संबंधित है, यह प्रश्न विद्वानों के मस्तिष्क को झकझोरता रहा है। श्वेताम्बर परम्परा के विद्वानों ने मूलग्रन्थ के साथ-साथ उसके भाष्य और प्रशमरति को उमास्वाति की ही कृति मानकर उन दोनों में उपलब्ध श्वेताम्बर समर्थक तथ्यों के आधार पर उन्हें श्वेताम्बर सिद्ध करने का प्रयास किया, वहीं दिगम्बर परम्परा के विद्वानों ने भाष्य और प्रशमरति के कर्ता को तत्त्वार्थ के कर्ता से भिन्न बताकर तथा मूलग्रन्थ में श्वेताम्बर परम्परा की आगामिक मान्यताओं से कुछ भिन्नता दिखाकर उन्हें दिगम्बर परम्परा का सिद्ध करने का प्रयास किया है। जबकि पं. नाथूराम प्रेमी जैसे कुछ तटस्थ विद्वानों ने ग्रन्थ में उपलब्ध श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों परम्पराओं से विरूद्ध तथ्यों को उभारकर और यापनीय मान्यताओं से उनकी निकटता दिखाकर उन्हें यापनीय परम्परा का सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। वस्तुतः ये समस्त तत्त्वार्थसूत्र की परम्परा के सन्दर्भ में किसी भी निश्चित अवधारणा को बनाने में तब तक सहायक नहीं हो सकते, जबतक कि हम उमास्वाति के काल का और इन तीनों धाराओं के उत्पन्न होने के काल का निश्चय नहीं कर लेते है। अतः सबसे पहले हमें यही देखना होगा कि उमास्वाति किस काल के है, क्यों कि इसी आधार पर उनकी परम्परा का निर्धारण संभव है।

उमास्वाति के काल निर्णय के सन्दर्भ में जो भी प्रयास हुए है वे सभी उन्हें प्रथम से चौथी शताब्दी के मध्य सिद्ध करते है। उमास्वाति के ग्रन्थों में हमें सप्तभंगी और गुणस्थान सिद्धान्त का सुनिश्चित स्वरूप उपलब्ध नहीं होता। यद्यपि गुणस्थान सिद्धान्त संबंधित कुछ पारिभाषिक शब्दों की उपस्थिति से इतना संकेत अवश्य मिलता है कि ये अवधारणायें अपने स्वरूप के

निर्धारण की दिशा में गतिशील थी। इससे हम इस निष्कर्ष पर तो पहुँच ही सकते है कि उमास्वाति इन अवधारणाओं के सुनिर्धारित एवं सुनश्चित होने के पूर्व ही हुए है। तत्त्वार्थसूत्र की जो प्राचीन टीकाएँ उपलब्ध है उनमें श्वेताम्बर परम्परा में तत्त्वार्थ भाष्य को और दिगम्बर परम्परा में सर्वार्थसिद्धि को प्राचीनतम माना जाता है। इनमें से तत्त्वार्थ भाष्य में गुणस्थान और सप्तभंगी की स्पष्ट एवं विस्तृत विवरण है। तत्त्वार्थसूत्र की परवर्ती टीकाओं में सर्वप्रथम अकलंक तत्त्वार्थ राजवार्तिक में चौथे अध्याय के अन्त में सप्तभंगी का तथा ९वें अध्याय के प्रारंभ में गुणस्थान सिद्धान्त का पूर्ण विवरण प्रस्तुत करते है। तत्त्वार्थ की टीकाओं के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों में विशेष रूप से श्वेताम्बर आगमों में समवायांग में जीवठाण के नाम से, यापनीय ग्रन्थ षट्खण्डागम में जीवसमास के नाम से और दिगम्बर परम्परा में कुन्दकुन्द के ग्रन्थों गुणठाण के नाम से इस सिद्धान्त का उल्लेख मिलता है। ये सभी ग्रन्थ लगभग पांचवीं शती के आसपास के है। इसलिए इतना तो निश्चित है कि तत्त्वार्थ की रचना चौथी पांचवीं शताब्दी के पूर्व की है। यह सही है कि ईसा दूसरी शताब्दी से वस्त्र-पात्र के प्रश्न पर विवाद प्रारम्भ हो गया, फिर भी यह निश्चित है कि पांचवीं शताब्दी में पूर्व श्वेताम्बर, दिगम्बर और यापनीय जैसे सम्प्रदाय अस्तित्व में नहीं आ पाये थे। निर्ग्रन्थसंघ (दिगम्बर), श्वेतपट्टमहाश्रमणसंघ और यापनीय संघ का सर्वप्रथम उल्लेख हल्सी के पांचवीं शती के अभिलेखों में ही मिलता है।

मूलसंघ का उल्लेख उससे कुछ पहले ई. सन् ३७० एवं ४२१ का है। तत्त्वार्थ के मूलपाठों की कहीं दिगम्बर परम्परा से, कहीं श्वेताम्बर परम्परा से और कहीं यापनीय स्पष्ट रूप से विभाजित होकर अस्तित्व में नहीं आये थे। श्री कापड़ियाजी ने तत्त्वार्थ को प्रथम शताब्दी के पश्चात् चौथी शताब्दी के पूर्व की रचना माना है। तत्त्वार्थसूत्र और उसके भाष्य में ऐसे भी अनेक तथ्य है जो न तो सर्वथा वर्तमान श्वेताम्बर परम्परा से और न ही दिगम्बर परम्परा से मेल खाते है। हिस्ट्री ऑफ मिडिवल स्कूल ऑफ इण्डियन लाजिक में तत्त्वार्थसूत्र की तिथि १-८५ ए.डी स्वीकार की गई है। प्रो.

विंटरनित्ज मानते है कि उमास्वाति उस युग में हुए जब उत्तर भारत में श्वेताम्बर और दिगम्बर सम्प्रदाय एक दूसरे से पूर्णतः पृथक् नहीं हुए थे। उनका ग्रन्थ तत्त्वार्थ स्पष्टतः सम्प्रदाय भेद के पूर्व का है। सम्प्रदाय भेद के संबंध में सर्वप्रथम हमें जो साहित्यिक सूचना उपलब्ध होती है, वह आवश्यक मूलभाष्य की है, जो आवश्यकनिर्युक्ति और विशेषावश्यक के मध्य निर्मित हुआ था। उसमें वीर निर्वाण के ६०९ वर्ष पश्चात् ही बोटिकों की उत्पत्ति का अर्थात् उत्तर भारत में अचेल और सचेल परम्पराओं के विभाजन का उल्लेख है। साथ ही उसमें यह भी उल्लेख है कि मुनि के सचेल या अचेल होने का विवाद तो आर्यकृष्ण और आर्य शिव के बीच वीर नि. सं. ६०९ में हुआ था, किन्तु परम्परा भेद उनके शिष्य कौडिण्य को कोट्टवीर से हुआ। इसका तात्पर्य यह है कि स्पष्ट रूप से परम्परा भेद वीर नि. सं. ६०९ के पश्चात् हुआ है। सामान्यतया वीर निर्वाण विक्रम संवत से ४७० वर्ष पूर्व माना जाता है, किन्तु इसमें ६० वर्ष का विवाद है, जिसकी चर्चा आचार्य हेमचन्द्र से लेकर समकालीन अनेक विद्वान भी कर रहे है। इतिहासकारों ने चन्द्रगुप्त, अशोक और सम्प्रति आदि का जो काल निर्धारित किया है, उसमें चन्द्रगुप्त और भद्रबाहु की तथा सम्प्रति और सुहस्ति की समकालिकता वीर निर्वाण को विक्रम संवत् ४१० वर्ष पूर्व मानने पर ही अधिक बैठती है। यदि वीर निर्वाण विक्रम संवत् के ४१० वर्ष पूर्व हुआ है तो यह मानना होगा कि संघभेद ६०९-४१० अर्थात विक्रम संवत् १९९ में हुआ। यदि इसमें भी हम कौडिण्य और कोट्टवीर का काल ६० वर्ष जोड़े तो यह संघभेद लगभग विक्रम संवत् २५९ अर्थात् विक्रम की तीसरी शताब्दी उत्तरार्ध में हुआ होगा। इस संघभेद के फलस्वरूप श्वेताम्बर और यापनीय परम्परा का स्पष्ट विकास तो इसके भी लगभग सौ वर्ष पश्चात् ही हुआ होगा। क्योंकि पांचवी शती के पूर्व इन नामों का कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता है।

तीसरी-चौथी शताब्दी के समवायांग जैसे श्वेताम्बर मान्य आगमों और यापनीय परम्परा के कसायपाहुड एवं षट्खण्डागम जैसे ग्रन्थों से तत्त्वार्थसूत्र की कुछ निकटता और विरोध यही सिद्ध करता है कि उसकी रचना इससे पूर्व हुई है।

तत्त्वार्थभाष्य की प्रशस्ति तत्त्वार्थसूत्र के कर्ता के काल का निर्णय करने का आज एकमात्र महत्वपूर्ण साधन है। उस प्रशस्ति के अनुसार तत्त्वार्थ के कर्त्ता उच्चैर्नागर शाखा में हुए। उच्चैर्नागर शाखा का उच्चनागरी शाखा के रूप में कल्पसूत्र में उल्लेख है। उसमें यह भी उल्लेख है कि यह शाखा आर्य शान्तिश्रेणिक से प्रारम्भ हुई। कल्पसूत्र स्थविरावली के अनुसार शान्तिश्रेणिक आर्यवज्र के गुरू सिंहगिरि के गुरूभ्राता थे। श्वेताम्बर पट्टावलियों में आर्यवज्र का स्वर्गवास काल वीर निर्वाण सं. ५८४ माना जाता है। अतः आर्यशान्ति श्रेणिक का जीवन काल वीर निर्वाण ४७० से ५५० के बीच मानना होगा। फलतः आर्यशान्तिश्रेणिक से उच्चनागरी की उत्पत्ति विक्रम की प्रथम शताब्दी के उत्तरार्ध और द्वितीय शताब्दी के पूर्वार्ध में किसी समय हुई। इसकी संगति मथुरा के अभिलेखों से भी होती है। उच्चैर्नागर शाखा का प्रथम अभिलेख शक सं. ५ अर्थात् विक्रम संवत् १४० का है, अतः उमास्वाति का काल विक्रम की द्वितीय शताब्दी या उसके पश्चात् ही होगा। उमास्वाति के तत्त्वार्थभाष्य में उन्हें उच्चैर्नागर शाखा का बताया गया है। इस शाखा के नौ अभिलेख हमें मथुरा से उपलब्ध होते है। जिन पर कनिष्क, हुविष्क और वासुदेव का उल्लेख भी है। यदि इनपर अंकित सम्वत् शक संवत् हो तो यह काल शक संवत् ५ से ८७ के बीच आता है, इतिहासकारों के अनुसर कनिष्क, हुविष्क और वासुदेव ई. सन् ७८ से १७६ के बीच हुए है। विक्रम संवत् की दृष्टि से उनका यह काल सं. १३५ से २३३ के बीच आता है अर्थात् विक्रम संवत् की द्वितीय शताब्दी का उत्तरार्ध और तृतीय शताब्दी का पूर्वार्ध। अभिलेखों के काल की संगति आर्य शान्तिश्रेणिक और उनसे उत्पन्न उच्चनागरी शाखा के काल से ठीक बैठती है। उमास्वाति इसके पश्चात् ही कभी हुए है। तत्त्वार्थभाष्य में उमास्वाति ने अपने प्रगुरू घोषनन्दी श्रमण और गुरु शिवश्री का उल्लेख किया है। मुझे मथुरा के अभिलेखों में खोज करने पर स्थानिक कुल के गणी उग्गहिणी के शिष्ट वाचक घोषक का उल्लेख उपलब्ध हुआ है। स्थानिककुल भी उसी कोटिकगण का कुल है, जिसकी एक शाखा उच्चानगरी है। कुछ अभिलेखों में स्थानिक कुल के

साथ वज्री शाखा का भी उल्लेख हुआ है। यद्यपि उच्चनागरी और वज्री दोनों ही शाखाएँ कोटिकगण की है। मथुरा के एक अन्य अभिलेख में 'निवतना सीवद' ऐसा उल्लेख भी मिलता है। निवर्तना सम्भवतः समाधि स्थल की सूचक है, यद्यपि इससे ये आर्यघोषक और आर्य शिव निश्चित रूप से ही उमास्वाति के गुरु एवं प्रगुरू है, इस निष्कर्ष पर पहुँचना कठिन है, फिर भी सम्भावना तो व्यक्त की ही जा सकती है।

आर्य कृष्ण और आर्य शिव जिनके बीच वस्त्र-पात्र संबंधी विवाद वीर नि. सं. ६०९ में हुआ था। उन दोनों के उल्लेख हमें मथुरा के कुषाणकालीन अभिलेखों में उपलब्ध होते है। यद्यपि आर्य शिव के संबंध में जो अभिलेख उपलब्ध है, उसके खण्डित होने से संवंत् का निर्देश तो स्पष्ट नहीं है, किन्तु 'निवतनासीवद' ऐसा उल्लेख है जो इस तथ्य का सूचक है कि उनके समाधि स्थल पर कोई निर्माण कार्य किया गया था। आर्य कृष्ण का उल्लेख करने वाला अन्य लेख स्पष्ट है और उसमें शक संवत् ९५ निर्दिष्ट है। इस अभिलेख में कोटीयगण, स्थानीयकुल और वैरी शाखा का उल्लेख भी है। इस आधार पर आर्य शिव और आर्य कृष्ण का काल वि. सं. २३० के लगभग आता है। वस्त्र-पात्र विवाद का काल वीर नि. सं. ६०९ तदनुसार ६०९ - ४१० - वि. सं. १९९ मानने पर इसकी संगति उपर्युक्त अभिलेख से हो जाती है क्योंकि आर्य कृष्ण की यह प्रतिमा उनके स्वर्गवास के ३०-४० वर्ष बाद ही कभी बनी होगी। उससे यह बात भी पुष्ट होती है कि आर्य शिव आर्य कृष्ण से ज्येष्ठ थे। कल्पसूत्र स्थविरावली में भी उन्हें ज्येष्ठ कहा गया है। सम्भावना यह भी हो सकती है ये दोनों गुरूभाई हो और उनमें आर्य शिव ज्येष्ठ और आर्य कृष्ण कनिष्ठ हों या आर्य शिव आर्य कृष्ण के गुरू हों। यद्यपि विशेषावश्यकभाष्य में साम्प्रदायिक अभिनिवेश के कारण यह क्रम उलट दिया गया है।

इन आर्य शिव को उमास्वाति का प्रगुरू मानने पर उनका काल तीसरी शताब्दी का पूर्वार्ध होगा, किन्तु तीसरी शती के उत्तरार्ध से चौथी शताब्दी पूर्वार्ध तक के जो भी जैन शिलालेख उपलब्ध है, उनमें कहीं भी

श्वेताम्बर, दिगम्बर या यापनीय ऐसा उल्लेख उपलब्ध नहीं होता। वस्त्र, पात्र आदि के उपयोग को लेकर विक्रम संवत् की तीसरी शताब्दी के पूर्वार्ध से विवाद प्रारंभ हो गया था, किन्तु स्पष्ट रूप से श्वेताम्बर, दिगम्बर या यापनीय परंपराओं के भेद स्थापित नहीं हुए थे। वि. सं. की छठीं शताब्दी के पूर्वार्ध के अर्थात् ई. सन् ४७५ से ४९० के अभिलेखों में सर्वप्रथम श्वेतपट्ट महाश्रमणसंघ (श्वेताम्बर), निर्ग्रन्थमहाश्रमणसंघ (दिगम्बर) और यापनीय संघ के उल्लेख मिलते है। प्रो. मधुसूदन ढाकी ने उमास्वाति का काल चतुर्थ शती निर्धारित किया है। उपर्युक्त चर्चा के आधार पर मैं इसे तीसरी शताब्दी के उत्तरार्ध से चौथी शती के पूर्वार्द्ध के बीच मानना चाहूँगा। चाहे हम उमास्वाति का काल प्रथम से चतुर्थ शती के बीच कुछ भी माने किन्तु इतना निश्चित है कि वे संघ भेद के पूर्व के है। यदि हम उमास्वाति के प्रगुरु शिव का समीकरण आर्य शिव, जिनका उल्लेख कल्पसूत्र स्थविरावली में भी है और जो उत्तर भारत में वस्त्र-पात्र संबंधी विवाद के जनक थें, से करते है तो समस्या का समाधान मिलने में सुविधा होती है। आर्य शिव वीर निर्वाण सं. ६०९ अर्थात् विक्रम की तीसरी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में उपस्थित थे। इस आधार पर उमास्वाति तीसरी के उत्तरार्ध और चौथी के पूर्वार्ध में हुए होगे, ऐसा माना जा सकता है। यह भी संभव है कि वे इस परंपरा भेद में भी कौडिण्य और कोट्वीर के साथ संघ से अलग न होकर मूलधारा से जुड़े रहे हो। फलतः उनकी विचारधारा में यापनीय और श्वेताम्बर दोनों ही परम्परा की मान्यताओं की उपस्थिति देखी जाती है। वस्त्र-पात्र को लेकर वे श्वेताम्बरों और अन्य मान्यताओं के सन्दर्भ में यापनीयों के निकट रहे है।

इस समस्त चर्चा से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि उमास्वाति का काल विक्रम संवत् की तीसरी और चौथी शताब्दी के मध्य है और इस काल तक वस्त्र-पात्र संबंधी विवादों के बावजूद भी श्वेताम्बर, दिगम्बर और यापनीयों का अलग-अलग साम्प्रदायिक अस्तित्व नहीं बन पाया था। स्पष्ट सम्प्रदाय भेद, सैद्धान्तिक मान्यताओं का निर्धारण और श्वेताम्बर, दिगम्बर और यापनीय जैसे नामकरण पाँचवी शताब्दी में या उसके बाद ही अस्तित्व

में आये है। उमास्वाति निश्चित ही स्पष्ट सम्प्रदाय भेद और साम्प्रदायिक मान्यताओं के निर्धारण के पूर्व के आचार्य है। वे उस संक्रमण काल में हुए है, जब श्वेताम्बर, दिगम्बर और यापनीय सम्प्रदाय और उनकी साम्प्रदायिक मान्यताएँ और स्थिर हो रही थी।

अतः वे उस अर्थ में श्वेताम्बर या दिगम्बर नहीं है, जिस अर्थ में आज हम इन शब्दों का अर्थ लेते है। वे यापनीय भी नहीं है, क्योंकि यापनीय सम्प्रदाय का सर्वप्रथम अभिलेखीय प्रमाण भी विक्रम की छठी शताब्दी के पूर्वार्ध और ईसा की पाँचवी शती के उत्तरार्ध (ई. सन् ४७५) का मिलता है। अतः वे श्वेताम्बर और यापनीयों की पूर्वज उत्तर भारत की निर्ग्रन्थ धारा की कोटिकगण की उच्चनागरी शाखा में हुए है। उनके संबंध में इतना मानना ही पर्याप्त है। उन्हें श्वेताम्बर, दिगम्बर या यापनीय सम्प्रदाय से जोड़ना उचित नहीं है।

यशोदा का त्याग

डॉ. लक्ष्मीनारायण पचौरी

उस दिन तुम मुझसे जब, विदा हुए थे प्रियतम,
साधन पथिक बनी थी, तब यशोदा तुम्हारी,
अब छोड़ चले हो जब, तुम यह काया-बंधन,
जीवन यह सफल बने, लगे नहीं मैं हारी।

मैंने अनुसरण किया, लक्ष्य रहे तुम मेरे,
चेतन-अवचेतन में, तुम ही थे आँखों में,
यह जीवन जीती थी, छाया के समान बस,
तुम थे धड़कन मेरी, बस रहे सांसों में।

करते करते जप-तप, कटे बयालीस वर्ष,
बीता था युग-युग सा, साधन का समय कभी,
भूली थी सब अपने, मनकी, तनकी व्यथा,
आँखों में बसे रहे तुम, देते थे शक्ति सभी।

तुमने थे झेले कष्ट, कठिन साधना भी की,
सुन-सुन कर हरषा था, सहधर्मिणी का हृदय,
तुम करते थे काय-क्लेश, होता था गर्व मुझे,
मुझको होता विश्वास, जानकर दृढ़ निश्चय।

भूलती निज कष्टों को, धीरज देख तुम्हारा,
इन्द्रिय-निग्रह, संयम, करते देख तप-त्याग,
जीवन मैंने अपना, वैसा ही ढाला था,
निजको अनुशासित कर, था मिला मुझे विराग।

बारह वर्षों की कठिन, तपस्या तुमने की जब,
मैं करती थी संयम, तब मन से काया से,
मैं भी हुई प्रसन्न, बोधि मिली जब तुमको,
थी हुई तपस्या सफल, भगवन की माया से।

व्रत ले जन-कल्याण का, घूमे तुम चारों ओर,
मानस मेरा फिर भी, हुआ ना कभी अनाथ,
सुनकर उपदेश तुम्हारे, सफल हो गया जीवन,
पूरा संकल्प हुआ, मेरा, तुम्हारा साथ।

पूरे होने आये, बयालीस चातुर्मास,
तुमने था बतलाया, होगा काल-धर्म यह,
निर्वाण प्राप्त होगा, इसी अमावस को ही,
कर्मों का होगा नाश, समय परम-पदका यह।

दीक्षा मैंने तुमसे, नहीं आज तक ली है,
पर करती हूँ पालन, पंच-महाव्रत हर दिन,
धन्य हो रहा हृदय, आज पत्नी का मेरा,
अंत समय लगता है, परीक्षा हुई कठिन।

दाम्पय-सुख की जो, चाह रही जीवन में,
छोड़ी थी मैंने वह, लालसायें मिथ्या सब,
आज जानती हूँ मैं, तुम होगे साथ सदा,
जीवन जब जीना है, ऐसा हो विश्वास अब।

कर लूँ शेष प्रणाम, हे प्रियतम आज तुम्हें,
तुम्हारी सब स्मृतियाँ, रखूँगी मैं संजोकर,
संबल उपदेशों का, रहेगा मुझे, सबको,
होगा संसार सुखी, उनसे प्रेरित होकर।

श्रीचन्द्रराज चरित्र

सूर्य के प्रकाश ने अपनी लम्बी-लम्बी भुजाओं से अन्धकार को दूरकर दिया है। कमल खिल उठे हैं। भौंरे गूंजते हुए प्रसन्नता की सुरीली तान छेड़ रहे हैं। कुशस्थल की प्रकृति में कुमार श्रीचन्द्र की पधरावणी से एक अलौकिक आलोक के दर्शन हो रहे हैं।

राज-प्रासाद सुंदर ढंग से सज रहे हैं। जगह-जगह तोरण बन्दनवारें लहरा रही हैं। स्थान-स्थान पर कुंकुम बिखर रहा है। नगर के मुख्य-मुख्य चौराहों पर दरवाजे बन रहे हैं। उन पर रंग बिरंगे वस्त्रों की सोना चांदी के बरतनों की, हीरे पन्ने मणिरत्नों की, केले के थम्भों की और पाँच-वर्ण के फूलों की सुन्दर सजावट हो रही है। सच्चे मोतियों की झालरियां, पुष्पमालायें, मकानों के दरवाजों पर खिड़कियों पर लटक रही हैं। चारों ओर धूपदानों में दशांग धूप की लपटें उठ रही हैं। गुलाबजल के छिड़काव हो रहे है। जात-जात के इत्रों की मधुर महक दिल और दिमाग को तरोताजा कर रही है। बहुमूल्य जरकशी वस्त्रों के वितान बंधे हुए हैं। फर्शों पर मखमली कालीनें बिछी हुई हैं।

उसी प्रसंग में ठोर-ठोर गाना बजाना और नृत्य के ठाठ लग रहे थे। पुरनारियाँ मंगल गीत आलाप रही थीं। सुंदर बहुमूल्य वस्त्रालंकारों से सुसज्जित स्त्री पुरुष मूर्तिमान पुण्य स्वरूप कुमार श्रीचंद्र के दर्शन करने की खुशी में इधर-उधर घूम रहे थे।

इतने में तोप के धमाके होने शुरू हुए। दूर-दूर से इकट्ठे हुए नागरिक राजमार्ग के दोंनों ओर जमा हो गये। जिनके मकान राजमार्ग के दोनों ओर थे उनकी तो खूब बन पड़ी। किनारे के पेड़ मकान उनके छज्जे चबूतरे कपोतपालिकाऐं दर्शकों की भीड़ से भरचक भर गई थीं। उस समय का दृश्य रंग-बिरंगे फूलों से भरे एक विशाल उद्यान के समान प्रतीत होता था।

शुभ घड़ी आ गई। कुमार श्रीचन्द्र बड़ी धूमधाम से नगर में प्रविष्ट हुए। किले पर सलामी की तोपें दगने लगीं। कवि, बन्दीजन, चारण, भाट आदि लोग

उनकी यशोगाथायें गाने लगे। सवारी राजमार्ग को शनैः शनैः पार करती हुई दुर्ग के सिंह-द्वार पर जा पहुँची। मार्ग में लोगों ने फूल वर्षाये। कन्याओं ने पीले चावल उछाले राज मार्ग फूलों से पट गये । स्थान-स्थान पर सधवा स्त्रियों ने सच्चे मोतियों के स्वस्तिकों से बधा-बधा कर कुमार का स्वागत किया।

दरबार में पहुँचकर कुमार ने कवियों, चारणों, विद्वानों को मनचाहा दान दिया। दरबारियों ने नागरिकों ने, अपने कुमार से भेटें की। महाराज प्रतापसिंह और महारानी सूर्यवती के सौभाग्य में चार चांद लग गये।

महाराजा प्रतापसिंह रत्नजटित स्वर्णसिंहासन पर जा बिराजे। श्रीचन्द्रराज भी उन्हीं के श्रीचरणों में सिंहासनासीन हुए। उस समय विद्याधर-राजाओं से, राजाओं से, और दरबारियों से विराजित वह राज-सभा इंद्रसभा का तिरस्कार कर रही थी।

उसी समय कुण्डिनपुर के राजा अरिमर्दन एक बंदरियां को लेकर वहां आये। राजा के साथ बंदरी को देख सारी सभा चकित हो गई? राजा अरिमर्दन ने बड़े विनीत भाव से कहना शुरू किया कि—

महाराजाधिराज! पहिले मुझसे अज्ञात अवस्था में अपराध हो गया है मेहरबानी करके उसकी माफी दें! कुमार श्रीचंद्र ने कहा–कैसा अपराध? और कैसी माफी साफ-साफ कहियें ताकि पता चले।

कुमार के ऐसा पूछने पर- राजा अरिमर्दन ने हाथ जोड़कर सारी घटना कह सुनाई। तब पिता की आज्ञा पाकर श्रीचंद्र ने उस बंदरीया की आंखों मे काले अंजन का प्रयोग करके उसे एक रूपवती रमणी के रूप में परिणत कर दिया। सब लोग चकित हो गये।

बंदरीपना मिट जाने से राजकुमारी सरस्वती लज्जा से अपना सिर झुकाकर अपने सास-ससुर के चरणों में नमस्कार करके चंद्रकला आदि रानियों में जाकर खड़ी हो गई। अरिमर्दन ने लाया हुआ दहेज महाराज की सेवा में समर्पित किया। साथ ही हंसावली के साथ धोखा करनेवाले अपने कुमार चंद्रसेन की तरफ से भी पूर्णतया क्षमा चाही। महाराज ने उसे अपनी फौज में सन्माननीय पद पर स्थापित किया।

भील्लराज मल्ल की कन्या मोहिनी पितृदत्त-दहेज सामग्री के साथ अपने भील बंधुओं को लेकर वहां आई। कुमार ने उसे भी रहने को एक सुन्दर महल दे दिया।

इस प्रकार सभी स्नेही–साथी–सखा और सेवक वहां आये, और अपना-अपना परिचय देकर महाराज द्वारा सन्मानित सत्कारित हुए। सारे कुशस्थलपुर में प्रसन्नता का वातावरण छा गया।

कुमार श्रीचन्द्रराज ने अपने भुजबल भाग्य-बल और बुद्धिबल से सहज में ही समुद्र पर्यंत तीन खण्ड पृथ्वी का साम्राज्य संप्राप्त किया। सोलह हजार देशों के स्वामियों ने अधीनता स्वीकार की। रथ हाथी घोड़े और सैनिकों की अपरिमित संख्या से अर्धचक्री के जैसे प्रभुता सम्पन्न श्रीचन्द्रराज की सर्वत्र जयजयकार होने लगी।

महाराजा प्रतापसिंह ने मौका देखकर शुभ दिन के, शुभ मुहूर्त्त में शास्त्रोक्त विधि से कुमार का अपूर्व और अवर्णनीय ढंग से महामहोत्संव पूर्वक राज्याभिषेक किया। सभी बड़े-बड़े राजा, महाराजा, विद्याधर, सामन्त, मंत्री, सेठ, सेनापति आदि उस समय उपस्थित थे। कुमार श्रीचन्द्र एक छत्रधारी राजराजेश्वर की उपाधि से विभूषित ए। चन्द्रकला को प्रधान–राजमहिषी का पद प्राप्त आ। कनकावली–पद्मश्री-मदनसुंदरी-प्रियंगुमंजरी-रत्नचूला-रत्नवती-मणिचूला-तारलोचना–गुणावली–चन्द्रमुखी–चन्द्रलेखा–तिलकमंजरी-कनकावती–कनकसेना सुलोचना और सरस्वती ये सोलह पट्टरानियां बनाई गईं।

चन्द्रावली–रत्नकान्ता और धनवती आदि रूप लावण्यवती एकसो सोलह रानियाँ हुई। चतुरा कोविदा आदि हजारों भोग-पत्नियाँ बनी।

प्राचीन पुण्यों और भोग-कर्मों की महिमा से एवं अनेक-रूपकारिणी महाविद्या से उतने ही रूप बनाकर श्रीचन्द्रराज उनके साथ आनन्द पूर्वक समय बिताने लगे। सुग्रीव-विद्याधरेन्द्र को उत्तर–श्रेणिक का एवं रत्नध्वज और मणिचूड-विद्याधर को दक्षिण-श्रेणिक का साम्राज्य प्रदान किया। अपने जय आदि चारों भाईयों को उनके मनपसंद देशों का स्वामित्व प्रदान किया।

सर्वत्र धर्म और सुख-शान्ति का सौराज्य हो गया। उनके गुणचन्द्र बुद्धिसागर लक्ष्मण आदि सोलहे हजार महामात्य और अमात्य हुए। उनकी सेना में बयाँलीस हजार हाथी, दस करोड़ घोड़े, अडतालीस करोड़ पदातियों की बड़ी तगड़ी संख्या थी। महासेनाधिपति का पद धनंजय को दिया गया।

राजराजेश्वर श्रीचन्द्र की राजसभा-बीणारव जैसे गायकों से हरि-तारक-अंगद आदि भट्टों से सुबुद्धि जैसे विद्वानों से विराजमान थी। सर्वत्र शांति का साम्राज्य छा गया। सारी पृथ्वी को अनृणी बना दी। तब सभी ज्योतिषियों ने संसार में चन्द्र संवत्सर की स्थापना की।

महाराजाधिराज श्रीचन्द्र ने हजारों जिन-मंदिर, लाखों धर्मशालायें, कुएँ-तालाब-वावडियाँ दानशालायें बाग बगीचे नगर आदिकों का निर्माण कराया। हमेशा श्रीजिनेश्वर भगवान की पूजा, आवश्यकादि नित्य-कृत्य, गुरु-भक्ति, सत्संग, दान शील तप और भाव रूप चतुर्विध धर्म की आराधना में अपनी शक्ति का सदुपयोग किया। सिद्धाचल, गिरनार, सम्मेतशिखर, आबु, अष्टापद आदि तीर्थों की संघ यात्रायें करके जन्म को सफल बनाया।

साधर्मियों में तन-मन-धन से वात्सल्य दिखाते हुए धर्म भावना बढ़ाई। कुव्यापारों का निषेध किया। कोई किसी को न सता सके ऐसा अभय-अमारी का ढिंढोरा पिटवा दिया।

इस प्रकार धर्म अर्थ और काम इन तीनों पुरुषार्थों को साधते हुए महारानी चन्द्रकला की कूख से उनको पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई। महाराजा प्रतापसिंह ने पौत्र दर्शन का आनंद-लाभ पाया। उसका नाम पूर्णचन्द्र रखा। दूसरी रानियों के गर्भ से भी पुत्र पुत्रियाँ पैदा हुए। इस प्रकार अनेक सुयोग्य पुत्रों से राजाधिराज श्रीचन्द्र अतीव शोभा पाये।

कुमार एकांगवरवीर भी युवावस्था को पाया। महाराजा महामल्ल की महारानी शशिकला से पैदा हुई प्रेमकलादेवी के साथ महाराजा प्रतापसिंह ने उसका विवाह बड़ी धूमधाम से किया। इस प्रकार संपन्न परिवार के साथ महाराजा सुखपूर्वक विराजमान थे।

एक दिन वनपालक ने बधाई दी कि आज महाज्ञानी श्री सुब्रत आचार्य महाराज पधारे हैं। महाराजा अपने पुत्र पौत्रों और अन्तः पुरकी रानियों के साथ गुरुवंदना के लिये पधारे।

गुरुमहाराज श्री सुव्रत आचार्य ने धर्मलाभ के साथ सुधा-मधुर वाणी में वीतराग धर्म का विशिष्ट स्वरूप धर्म देशना में फरमाया। महाव्रत रूप सर्वविरति-साधु धर्म और अणुव्रत रूप देशविरति-गृहस्थ धर्म की सुन्दर व्याख्या की। श्रीसुब्रतमहाराज की देशना से प्रभावित हो महाराज-प्रतापसिंह महारानी–सूर्यवती, नगरसेठ लक्ष्मीदत्त सेठानी लक्ष्मीवती, मंत्री मतिराज आदि प्रबुद्ध हुए। परिवार की आज्ञा से संवत्सर-दान देते हुए शासन प्रभावना करते हुए बड़े ठाट से उन सब ने दीक्षा ली। कइयों ने सम्यक्त्व ग्रहण किया।

अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार सबने कुछ न कुछ व्रत ग्रहण किया। श्रीचन्द्र ने अपनी रानियों के साथ गृहस्थधर्म स्वीकार किया। श्रीसुव्रताचार्य महाराज को एवं साधु-साध्वियों को वंदन करके श्रीचन्द्रराज आदि अपने-अपने घरों को लौट आये। श्रीसुव्रताचार्य महाराज भी अपने परिवार के साथ अन्यत्र विहार कर गये।

राजाधिराज श्रीचन्द्र का राज्य मानों धर्म का साम्राज्य था। सबको अपने-अपने धर्मपालन में स्वतंत्रता थी। सबके प्रति उनका समान प्रेम था। शासन की प्रभावना, अभिवृद्धि और धर्म के साथ प्रशस्त कर्मो का प्रचार उनका जीवनोद्देश्य था।

राजर्षि-प्रताप, महर्षि-लक्ष्मीदत्त, महत्तरा-सूर्यवती, साध्वी लक्ष्मीवती आदि सब उत्कृष्ट चारित्र पालन करके अन्तिम अनशन से स्वर्गवासी हो एकावतारी हुए। उनके देहोत्सर्ग-स्थान पर बड़े-बड़े स्तूपों की रचना की गई। पूजा का प्रबंध किया गया। राजा और रानियों ने बड़ी-बड़ी रथ यात्रायें निकलवाई। उनके सोलह सौ पुत्र-पुत्रियाँ हुई। सतरह पुत्र बड़े प्रसिद्ध हुए।

बारह वर्ष तक कुमार पद से समस्त कलाओं में कुशल हुए। सौ वर्ष तक एकछत्र साम्राज्य का भोग किया। सारी प्रजा को सुखी किया। पारसमणि

और सुवर्ण पुरुष के योग से उनने स्थान-स्थान पर दानशालायें सड़के खुलवाई और नई बनवाई। सड़कों के दोनों ओर नये पेड़ लगवाये। जैन धर्म के विश्वव्यापी सिद्धान्तों का प्रचार-कीर्तिस्तंभों पर बड़ी-बड़ी लाटों पर गुफाओं की भित्तियों पर, अंकित किया। शास्त्र लिखवाकर साधु संतों को, विद्वानों को भेंट किये।

वार्धक्ये मुनिबृत्तीनां– के सिद्धान्त को स्मरण रखनेवाले महाराजाधिराज श्रीचन्द्र ने अपने छोटे भाई एकांगवरवीर को श्रीपर्वत के चन्द्रपुर का, ज्येष्ठ पुत्र पूर्णचन्द्र को कुशस्थल पुर का राज्य सौंप दिया। दूसरे भी कनकसेन आदि राजकुमारों को अलग-अलग देशों के राज्य बांट दिये। सबको प्रसन्न कर दिया। स्वयं नव प्रकार के परिग्रह की मूर्च्छा से मुक्त होने लगे।

जड़ और चेतन ये दोनों अनादि तत्त्व हैं। इन दोनों के मिश्रण का नाम ही संसार है। संसार में चार गतियां हैं। नरक-गति और तिर्यंच-गति पाप से प्राप्त होने वाली दुर्गति कही जाती हैं, तो मनुष्य गति और देव गति पुण्य से प्राप्त होती हैं। मनुष्य गति में सम्यग् दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र की साधना से जड़ और चेतन में भेद पैदा हो जाता है। कर्मों के अभाव में चेतन सच्चिदानन्द रूप होकर आत्यन्तिक और एकान्तिक मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

आचार्य श्री धर्मघोष उसी एकान्तिक और आत्यन्तिक मोक्ष के लक्ष्य को अपनाते हुए जनता में उसका प्रचार भी करते हैं। अपने साधु-परिवार के साथ एक दिन कुशस्थल के बाहरी उद्यान में उनका समवसरण हुआ।

वनपालक ने राजाधिराज श्रीचन्द्र को आचार्य श्री के आगमन से अवगत किया। सत्संग-प्रेमी महाराजा ने अपने जन परिवार के साथ आचार्यश्री के दर्शन वंदन एवं सिद्धान्त-श्रवण का लाभ लिया।

आचार्यश्री ने आत्म-गुणों का वर्णन करते हुए ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप और शक्ति-प्रयोग का विधान किया। भोग में फंसकर जीव अजीव के पास अधिक पहुँचता है, और त्याग की साधना से जीव अपने रूप को पाता

हुआ परमात्मा बन जाता है। इस निरूपण को आत्मसात् करते हुए महाराजाधिराज राजराजेश्वर श्रीचन्द्र ने त्याग धर्म को अपनाने की भावना व्यक्त की। उस समय चन्द्रकला आदि रानियाँ, गुणचन्द्र आदि मन्त्रियों ने, आठ हजार नागरिक, अनेकों सेठ साहुकार, और चार हजार सन्नारियाँ भी उसी त्याग मार्ग को अंगीकार करने के लिये तैयार हुए।

बड़े ठाट से भागवती दीक्षा का महासमारोह सम्पन्न हुआ। गृहस्थी के त्याग से अनगार-धर्म को स्वीकारते हुए सबने सर्वविरति चारित्र रूप अहिंसा, सत्य, अचौर्य ब्रह्मचर्य और सममत्व-इन पांच महाव्रतों को स्वीकार किया। गुरू-कृपा, कठोर साधना, और निरन्तर अभ्यास के परिणाम से द्वादांगी के वेत्ता हेकर श्रीचन्द्र राजऋषि आठ वर्ष तक छद्मस्थ भाव में विचरते हुए, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय इन चारों घनघाती कर्मों को खपाकर निर्मल अनन्त केवल ज्ञान केवल दर्शन को प्राप्त हुए। लोकालोक के त्रैकालिक भावों को संपूर्ण रूपसे जानने देखने लगे।

उनके केवल ज्ञान का उत्सव राजाओं ने सुरासुरों ने, बड़ी धूमधाम से मनाया। राजर्षि श्रीचन्द्र केवली होकर गामानुगाम विचरते हुए लोगों को धर्म-मार्ग के अनुयायी बनाये। नव्वे हजार करीब नर-नारियों को दीक्षा देकर महाव्रधारी साधु साध्वी बनाये। सभ्यक्त्व अणुव्रत आदि नियमों को दिलाकर उन्होंने गृहस्थों को अणुव्रती श्रावक संघ में सम्मिलित किया। गुणचन्द्र आदि साधुओं को एवं चन्द्रकला कमलश्री आदि साध्वियों को भी केवल ज्ञान हुआ।

इस प्रकार पैंतीस वर्षों तक भव्यात्माओं को बोध देते हुए श्रीचन्द्र केवली एकसौ पचपन वर्ष की पूर्णायु को भोगकर अक्षय-मोक्षपद को प्राप्त हुए। इसी बात को शास्त्रकारों ने इस प्रकार रही है–

साहिय वास सयं जो, तिखंड-निव-सय-सेवियपयकमलो।
एगच्छत्तं रज्जं, पालइ इन्दुव्व सिरिचंदो।
कम्मट्ठ-गंठि-अद्धं-अट्ठहिं वरिसेहिं सच्छ जोगेण।
संखवियं जेण मुणीसो–सिरिचन्दो केवली जयओ।।

तित्थयरपासतित्थे, पणपन्नसयाउअं च पालित्ता।
सिद्धिं पत्तो जो तं, सिरिसिरिचंदं णमह णिच्चं।।
आयंबिल वद्धमाणं-महातवं वद्धमाण-सुभावेण।
सययं कुणंतु भव्वा! लहंतु लहुयं सिवंसोक्खं।।

अर्थात्-तीन खण्ड के सैकड़ों राजाओं से सेवित चरण श्रीचन्द्रराज ने कुछ अधिक सो वर्ष तक एक-छत्र साम्राज्य का स्वामित्व किया। दीक्षा लेकर स्वच्छ योगों से आठ वर्ष में आठ कर्मों के आधे चार घनघाती कर्मों का अन्त करके जिन्होंने केवल ज्ञान पाया, ऐसे मुनीश्व श्रीचन्द्र केवली की जय हो। इस प्रकार एक सो पचपन वर्ष की पूर्णायु को पालकर तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ स्वामी के तीर्थ में सिद्धि को पाये उन श्रीचन्द्र महाराज को हमेशा प्रणाम करो। हे भव्यात्माओं! बढ़ते हुए भावों से श्रीचन्द्रराज के जैसे आयंबिल वर्द्धमान तपको करो और जल्दी से शिव-सुख को प्राप्त करो।

श्रीचन्द्र केवली के परिवार में जो साधु साध्वी हुए उनमें से कई मोक्ष गामी, कई अनुत्तर विमानवासी देवता, और कई एकावतारी हुए। जो भवान्तर में मोक्ष जावेंगे।

गणधर श्रीगौतम स्वामीजी गणतंत्र के अध्यक्ष महाराजा चेटक आदि प्रमुख श्रोताओं को लक्ष्य कर फरमाते हैं कि—

सेणिय-निवस्स भणियं, रायगिहे भगवया परम-गुरुणा।
जह सिरिचंदचरित्तं, तह कहियं रायवर! तुज्झ।।

अर्थात्—राजगृह नगर में परम गुरु भगवान श्री महावीर स्वामी ने राजा श्रेणिक को श्रीचन्द्र चरित्र फरमाया वैसे ही हेमहाराज चेटक! आपको मैंने कथा रूप से कह सुनाया है।

गणधर श्रीगौतमस्वामी के श्रीमुख से श्रीचन्द्र के चारू चरित्र को सुनकर राजा चेटक बड़े प्रभावित हुए और तपोधर्म की साधना के लिये दृढ़ संकल्प किया।

समाप्त

संकलन–

ब्रह्मचर्य की शक्ति

भूरचन्द जैन

स्वामी विवेकानन्द अपने मित्र के अति आग्रह पर उसके यहां भोजन करने पधारे। भोजन करने से पहले उनके स्वागत् कक्ष में रखी पुस्तक को सरसरीनजर से देखा।

जब स्वामी विवेकानंद अपने मित्र के साथ भोजन करते हुए भारत की आध्यात्मिकता पर चर्चा करने लगे। उस समय स्वामी विवेकानंद ने सरसरी निगाह से देखी पुस्तक के कई उदाहरणों से अपने मित्र को समझा रहे थे।

मित्र स्वामीजी की बातें सुनकर न केवल प्रभावित हुआ अपितु पूछा कि आप जिस पुस्तक के उदाहरण दे रहे है। आपने इसे पढ़ा नहीं फिर भी आप इस पुस्तक के अध्यायों से उदाहरण कैसे दे रहे हैं?

स्वामीजी ने कहा कि यह ब्रह्मचर्य का प्रभाव है। ब्रह्मचर्य में ऐसी शक्ति होती है जो ज्ञान को बढ़ाती है।

चम्मच चोर

भूरचन्द जैन

नगर सेठ रामानन्द का जन्म दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा था। जिसमें नगर के सभी वर्गों के सभ्रान्त नागरिकों के साथ विभिन्न स्थानों से कई गणमान्य नागरिक सम्मिलित हुए। इस अवसर पर सेठ रामानन्द ने प्रीतिभोज का आयोजन किया। जिसमें कई प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन आदि बनाये गये।

सेठ रामानन्द के जन्म दिवस पर आने वाले आगन्तुक आ-आकर जन्म दिन की बधाई देते। रामानन्द भी आगन्तुकों को भोजन की मनुहार करते थक नहीं रहे थे। इस प्रीतिभोज में नगर का जटाशंकर भी सम्मिलित हुआ। जिसकी चोरी करने की आदत थी।

जन्म दिवस का प्रीतिभोज चल रहा था। आगन्तुक चांदी की थाली, कटोरियों में भोजन लेकर चांदी के चम्मच से भोजन करते हुए आपस में बतियाते हुए हंसी-खुशी का एक-दूसरे के प्रति इजहार कर रहे थे। जटाशंकर भी भोजन कर रहा था। उसे चांदी का चम्मच अच्छा लगा और अपनी आदतनुसार उसने एक चांदी का चम्मच अपने पांवों में पहने मोजे में छिपा लिया। जिसे भोजन करते सेठ मफतलाल ने देख लिया। जबकि जटाशंकर यह समझ रहा था कि मेरे द्वारा चांदी का चम्मच चुराते हुए किसी ने नहीं देखा। वह दूसरा चांदी का चम्मच लेकर भोजन करता हुआ अन्य लोगों से गप्पे लड़ाता रहा।

सेठ रामानन्द के जन्म दिवस के इसी खुशी में आयोजित प्रीतिभोज में लोगों को अधिक खुश करने के लिये सेठ मफतलाल ने कहा कि मैं इस अवसर पर आपको जादू दिखाता हूँ। सेठ मफतलाल के मुख से जादू की बात सुनकर प्रीतिभोज में आनन्द की लहर दौड़ पड़ी।

सेठ मफतलाल जादू दिखाने लगे और उपस्थित लोगों को कहा कि

मैं एक चम्मच अपने कोट की जेब में डालता हूं। यही चम्मच मैं आप में से किसी एक को मंच पर खड़ाकर उसके पहने कपड़ों में से कहीं पर से निकल सकता हैं। लोगों ने कहा आप अपना जादू शुरू करें। सेठ मफतलाल ने जादू शुरू करने से पहले सबके सामने चांदी का एक चम्मच अपनी जेब में डाला और आदतन चोर जटाशंकर को मंच पर बुलाया कुछ दिखावटी जादुई शब्दां का उच्चारण करते हुए कहा कि अब मैं जटाशंकर के पहने मोजों में से चम्मच निकालता हूँ। फिर जादुई शब्दों का उच्चारण करते जटाशंकर के मोजे में से चांदी का चम्मच निकाल दिया।

इस जादू को देखकर प्रीतिभोज में सम्मिलित लोगों ने खूब जोर की तालियां बजाई। लेकिन जटाशंकर का चेहरा उतर गया और उसने मन ही मन यह प्रतिज्ञा की कि अब मैं भविष्य में कभी भी चोरी नहीं करूंगा। इसके बाद जटाशंकर की चोरी करने की आदत छूट गई।

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2247 6874, Resi: 2246 7707

D. SANDIP & COMPANY
107, Ratnadip Building, Phone : 2369 0054
Resi- Oberoi Gardens Thakur Village
Kandewali, East Mumbai, 'C' Wing flat No. 14/1404.
Phone : (R) 2886 8940

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

CLUB BITES
236A, A.J.C. Bose Road
Kolkata - 700 020
Vegetarian Restaurant
At Lee Road, Call - 2280 1582

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 2282-4649,
(Resi) 2247-2670

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment, 15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533639582

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9831028566, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports
(P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufacturers of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2269-6241/2950 (O) 2239-0581

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 007
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019 , Phone : 2287-0448

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2268-4755, (Resi) 2274-0817

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663,
Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

RAJENDRA KUMAR GANDHI
Jewellers & Bankers
A-38/1 Gol Kothi, Varanasi
Phone : (O) 2333224 (R) 2454125, 2586460

FANCY VELVET CO.
154 Dharamtalla Street, Kolkata - 700 013
Phone : (O) 2236-8523 (R) 2284-8719 (M) 9831029197

MILLY CHORDIA
2303, 3rd nail, 6th Floor, Desence Colony
Indria Nagar, Bangalore-- 38, Phone : 2229-7608

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan
Kolkata Nasta
Badsha Khan
Picnic
Raja
Shubham
Bhaonagari Ghantia
Jocker
Lajawab
Papri Ghantia
Rim Jhim
Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columb eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 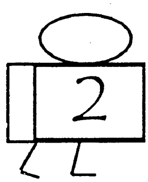 Stop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

With Best Compliments

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXVIII. NO. 6 TITTHAYARA September 2004
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under R.N. No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225